13 [redacted].लेने को हरिनाम है, देने को अन्न दान।
तरने को आधीनता, बूड़न को अभिमान॥

शब्दार्थ—लेने के लिए हरि या प्रभु का नाम (सर्वोत्तम) है। देने के लिए अन्न-भोजन का दान (सर्वश्रेष्ठ) है। तरने के लिए या भव सागर से पार होने के लिए स्वयं को ईश्वर या गुरु के अधीन कर देना (उसकी मर्जी, कृपा पर छोड़ देना, अथवा सम्पूर्ण रूप से समर्पित हो जाना) ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। तथा डूबने नष्ट होने के लिए अभिमान करना ही सबसे बड़ा कारण है। (यानि अभिमानी का सिर सदैव नीचा होता है।)

14. कबीर कुसंग न कीजिये, पाथर जल न तिराय।
कदली सीप भुजंग मुख, एक बूंद तिर भाय॥ १२॥

Kabir Kusang Na Keejiye, Paathar Jal Na Triaaye.
Kadalee Seep Bhujang Mukh, Aik Boond Tir Bhaaye..12..

Kabir Saheb says that one must not join the company of bad persons, because a piece of stone can never float on the surface of water, i.e., like, a person, riding a boat made of stone, cannot cross a river, in the same manner, joining company of bad persons can never be virtuous. A drop of Swati Nakshatra (name of the fifteenth Nakshatra) becomes camphor when it falls on a banana plant, it becomes a pearl when it falls into a shell and becomes poison when it falls into the mouth of a snake, i.e., the drop is one and the same but it changes its properties according to the places it falls in.

15. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥ १५॥

Baraa Huaa To Kyaa Huaa, Jaise Per Khajoor.
Panthee Ko Chchaayaa Naheen, Phal Laage Ati Door..15..

Is being big of any advantage? We may take, for example, tall palm trees. This tree neither provides shadow to the passers-by nor is it easy to reach its fruit because its fruit is beyond one's reach. So, having inflated ego does not benefit others in any manner.

16. [redacted].श्रम ही ते सब होत है, जो मन राखे धीर।
श्रम ते खोदत कूप ज्यों, थल में प्रगटे नीर॥

शब्दार्थ—परिश्रम द्वारा ही सब कार्य सम्पन्न होते हैं; यदि मन में धैर्य रखते हुए सतत् प्रयास किया जाए। जिस प्रकार मेहनत करके कुआं खोदते रहने पर अन्ततः जल निकलता है।